नैतिकता और वैश्विक शांति के लिए मूल्य शिक्षा

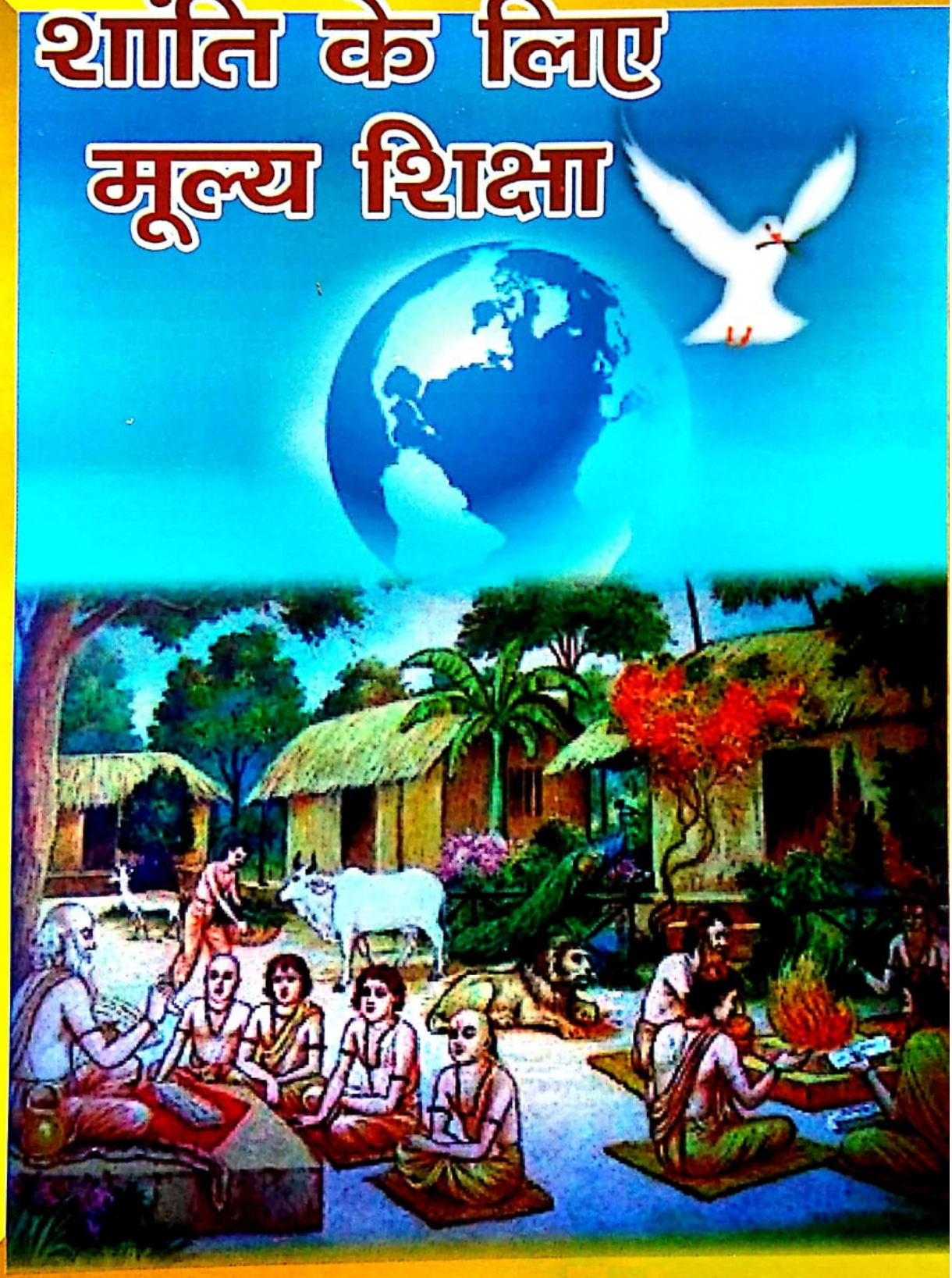

डॉ. शिवपाल सिंह
राकेश कुमार केशरी

Scanned by CamScanner

39.मानवाधिकार एवं महिला सशक्तिकरण
—विनोद कुमार 215
40.भारतीय संस्कृति में मूल्यों की उपयोगिता (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)
—डा. प्रज्ञा, श्रीमती पूजा अग्रवाल 222
41.शांति, समानता एवं सदाचार के विकास में मूल्य शिक्षा की भूमिका
—डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, अंकिता जांगिड 225
42.वर्तमान परिपेक्ष्य में शांति शिक्षा का महत्व
—सोमेन्द्र सिंह 230
43.व्यक्तित्त्व विकास में मूल्यों की भूमिका
—डॉ. नवनीत सक्सैना, अखिलेश्वर प्रताप सिंह 233
44.विश्वशान्त्यै मूल्यशिक्षा, मूल्य शिक्षायै च संस्कृतं सस्कृतिस्तथा
—डॉ0 राजेश भारद्वाज 236
45.नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा
—कीर्ति केसरवानी 240
46.महिला सशक्तिकरण के सरकारी प्रयास का एक आंकलन
—डॉ. लोकेन्द्र कुमार 243
47.मानव निर्माण में नैतिक मूल्यों का आत्मबोध आवश्यक
—डॉ. अमिता जैन 250
48.महात्मा गाँधी और नैतिक मूल्य
— शोभा रतूडी 254
49.सम्पूर्ण विश्व में शांति के प्रचार—प्रसार में शिक्षा का योगदान
—सोनिका रानी 260
50.गाँधी जी का शिक्षा दर्शन एवं मानव मूल्य
—पूजा रानी, डॉ. अनिल कुमार तेवतिया 264
51.पालि साहित्य में अहिंसा, शान्ति की जननीः एक अध्ययन
—चम्पालाल मंद्रेले 271
52.धार्मिक(आध्यात्मिक) मूल्यों की शिक्षा से ही नैतिकता और वैश्विक शान्ति संम्भव
—सुशील कुमार 275
53.भारतीय चिन्तन : शान्ति का अग्रदूत
—डा. छाया सोनी, धनंजय भारती 278
54.सीखने के नवान्वेशी उपकरण और संसाधन
—रमेश कुमार अवस्थी, सीमा फुलेरा, अजयपाल सिंह 282
55.अनुदानित सरकारी एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत बी.एड. शिक्षकों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन
—डा. सुनील सिहं गहलोत 285
56.मूल्यों की शिक्षा एवं नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा
—डॉ. के.सी. बेहरा, अनिल कुमार शर्मा 292
57.वैश्वीकरण के युग में भारतीय मूल्य, संस्कृति एवं शिक्षा
—डॉ. सुरक्षा बंसल 298
58. इसाई विद्यालयों तथा सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन
—डॉ. आभा सिंह, संजीव कुमार 302

Scanned by CamScanner

41.

शांति, समानता एवं सदाचार के विकास में मूल्य शिक्षा की भूमिका

❖ डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, सहा. आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राज.)
❖ अंकिता जांगिड़, शोधार्थी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

सारांश

मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो" मूल्य ऐसी आचरण संहिता का सद्गुण है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धिति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। मूल्य परक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है, जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हो। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उसके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है, जिससे उसका संतुलित एवं सर्वतोमुखी विकास हो सके। वर्तमान में मूल्यों के क्षरण की जो परिस्थितियां दिखाई दे रही है, उसके लिए औपचारिक तथा अनोपचारिक दोनों ही शिक्षा पद्धिति जिम्मेदार है। अनौपचारिक शिक्षा का मूल केन्द्र – परिवार जहां एक ओर अपना दायित्व निर्वाह नहीं कर पा रहा है, वहीं औपचारिक शिक्षा के केन्द्र–शिक्षण संस्थान भी अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूर्णतया असफल रहे हैं। जिसका परिणाम प्रत्यक्षतः हमारे सामने है। बच्चे माता–पिता का सम्मान नहीं करते, वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है। शिक्षक की गरिमा निरन्तर गिर रही है, परिवार टूट रहे हैं, रिश्तों की मर्यादाएं समाप्त हो रही हैं, समाज में हिंसा, अपराध, बलात्कार, चोरी–डकैती, भ्रष्टाचार, आंतकवाद जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। हमारे युवा विद्यार्थी दिग्भृमित होकर न केवल अपना बल्कि अपने राष्ट्र का अहित कर रहे हैं। ऐसी स्थितियों पर नियंत्रण का एक प्रमुख साधन शिक्षा को मूल्यपरक बनाना है। यदि हम देश को एक अच्छा भविष्य देना चाहते हैं तो मूल्य शिक्षा ही सबसे बेहतर विकल्प है।

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्य है। इसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है, जो कि उसके व्यवहार का नियंत्रण एवं निर्देशन करता है। प्रो. अरबन ने अपनी पुस्तक Fundamental of Ethics में लिखा है– "मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो" मूल्य ऐसी आचरण संहिता का सद्गुण है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धिति का

Scanned by CamScanner

निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मनुष्य की धारणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति तथा आस्था आदि समाहित हैं। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तः करण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा क्रमशः निःसृत एवं परिपोषित होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि मूल्य मनुष्य के अन्तरतम में जगती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार के कर्म करने के लिए प्रेरित करती है तथा उसके आचरण को शासित करती है।

मूल्य शिक्षा – शिक्षा का मूल उद्देश्य "शिक्षते उपादीयते विदयामपा सा शिक्षा" अर्थात जिसके द्वारा ज्ञान उपादान किया जाये वह शिक्षा है। शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को एक श्रेष्ठ नागरिक बनाना है जो जीवन मूल्यों से युक्त हो, उसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना तथा द्रुत गति से बदलते हुए युग के साथ मानव कल्याण और उसके विकास हेतु सदा तत्पर रहने की क्षमता हो। मूल्य परक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है, जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हो। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उसके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है, जिससे उसका संतुलित एवं सर्वतोमुखी विकास हो सके।

किन्तु वर्तमान में मूल्य परक शिक्षा के नाम जो क्रियाएं– प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं, उनसे लगता है कि देश, समाज और व्यक्ति असमंजस और डांवाडोल स्थिति में है। वर्तमान शिक्षा ने विद्यार्थियों को शाश्वत मूल्यों से नहीं जोड़ा, साथ ही उन्हें मानसिक रूप से अपाहिज बना दिया। यह शिक्षा जानकारी, ज्ञान और कौशल तो प्रदान कर सकती है किन्तु नैतिक व आचरण मूल्यों का पूर्ण विकास नहीं कर पाई है।

वर्तमान में मूल्यों के क्षरण की जो परिस्थितियां दिखाई दे रही है, उसके लिए औपचारिक तथा अनोपचारिक दोनों ही शिक्षा पद्धिति जिम्मेदार है। अनौपचारिक शिक्षा का मूल केन्द्र – परिवार जहां एक ओर अपना दायित्व निर्वाह नहीं कर पा रहा है, वहीं औपचारिक शिक्षा के केन्द्र–शिक्षण संस्थान भी अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूर्णतया असफल रहे हैं। जिसका परिणाम प्रत्यक्षतः हमारे सामने है। बच्चे माता–पिता का सम्मान नहीं करते, वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है। शिक्षक की गरिमा निरन्तर गिर रही है, परिवार टूट रहे हैं, रिश्तों की मर्यादाएं समाप्त हो रही हैं, समाज में हिंसा, अपराध, बलात्कार, चोरी–डकैती, भ्रष्टाचार, आंतकवाद जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। हमारे युवा विद्यार्थी दिग्भृमित होकर न केवल अपना बल्कि अपने राष्ट्र का अहित कर रहे हैं। हाल ही में देश के उच्च शिक्षण संस्थान JNU तथा अन्य में हुई घटनाएं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। ऐसी स्थितियों पर नियंत्रण का एक प्रमुख साधन शिक्षा को मूल्यपरक बनाना है। यदि हम देश को एक अच्छा भविष्य देना चाहते हैं तो मूल्य शिक्षा ही सबसे बेहतर विकल्प है।

- **शांति, समानता, तथा सदाचार के विकास में मूल्य शिक्षा**

वर्तमान में हम देख रहे हैं, चारों ओर अशांति का वातावरण है। आतंकी गतिविधियों के बढ़ने से निर्दोस लोग रोजाना अपनी जान गंवा रहे हैं। साम्प्रदायिकता

Scanned by CamScanner

का जहर दिन–प्रतिदिन फैलता ही जा रहा है, जिसमें कुछ महत्वाकांक्षी राजनेता या दल अपनी रोटियां सेक रहे हैं। समाज पर तथा राष्ट्र पर इसका कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इसी प्रकार चारों ओर आचरणहीनता की स्थिति नजर आती है– एक डॉक्टर मृत रोगी से भी फीस वसूलता है तो एक वकील, निर्दोष को पैसों की खातिर फांसी पर पहुंचा सकता है, घर में वृद्ध माता–पिता को सन्तान वेज्जत करने लगी है, तो कहीं शिक्षक पैसे लेकर अयोग्य को पास कर रहे हैं। नारी जो कभी पूज्या हुआ करती थी, समाज को संस्कार देती थी, आज पैसे और प्रसिद्धि की खातिर भोग्या और प्रदर्शन की वस्तु बन कर रह गई है। हम सबको और विशेषकर शिक्षकों को इस पर गहराई से चिन्तन करना होगा तथा ऐसे कारगर प्रयास करने होंगे जिनके सकारात्मक परिणाम नजर आएं। 'मूल्य परक शिक्षा' एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो इन विपरीत परिस्थितियों पर नियंत्रण में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है।

शांति, समानता तथा सदाचार के विकास में मूल्य शिक्षा की भूमिका निम्न प्रकार हो सकती है।

- **भ्रष्टाचार पर अंकुश**

वर्तमान में हमारे देश की एक प्रमुख समस्या है– भ्रष्टाचार। समाज का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जो इस भ्रष्टाचार रूपी दानव से अछूता है। भ्रष्टाचार के मूल में मेरे अनुसार मनुष्य की अतिभौतिकवादी प्रवृत्ति है। प्रत्येक व्यक्ति रातों–रात पैसा और प्रसिद्धि पाना चाहता है, चाहे उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े। यदि परिवार में माता–पिता तथा शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक स्व–आचरण द्वारा तथा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में कर्त्तव्य परायणता की भावना का समावेश करने का प्रयास करें, तो इस समस्या से बहुत कुछ बचा जा सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करें तो समाज से अनेक समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी।

- **पर्यावरण चेतना का विकास**

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से जूझ रहा है। जिसके कारण न केवल पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, बल्कि सूखा, बाढ़ तथा आये दिन भूकम्प देखने को मिल रहे हैं। वास्तव में इन परिस्थितियों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु मनुष्य ने पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया है और अभी भी जारी है। अगर यही हालात रहे तो, हम आगामी पीढ़ियों को क्या भविष्य देकर जाएंगे, सोचना मुश्किल नहीं है। इस विषय पर आज सर्वाधिक चिन्तन की आवश्यकता है। हमें बच्चों में प्रारम्भ से ही पर्यावरण के प्रति चेतना का विकास करना होगा। जो तभी संभव है जब हम स्वयं तदनरूप आचरण करें। अधिकाधिक वृक्षारोपण करें, प्लास्टिक को कभी भी खुले में न फेंके, अपने घर की ही भांति सार्वजनिक स्थानों को भी समझे, जल स्रोतों में गन्दगी न फेंके आदि उदाहरण हमें बच्चों के सामने प्रस्तुत करने चाहिए। शिक्षण संस्थानों में पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में पर्यावरण चेतना का विकास किया जाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

- **राजनैतिक चेतना का विकास**

किसी भी राष्ट्र के विकास में उसकी राजनीति का अत्यधिक योगदान होता है। यदि हम अपने राष्ट्र के वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो सिर शर्म से झुक जाता है। राजनीति का स्तर अत्यधिक निम्न हो गया है। अपने निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए राजनेता भारत माता को दोनों हाथों से लूटने में लगे हैं, किसी भी तरह की कोई मर्यादा नहीं बची है। अगर ऐसे ही हालात रहें तो आने वाला भारत कैसा होगा? आज युवा वर्ग स्वयं भ्रमित हो गया है, राजनैतिक लोग उनका इस्तेमाल कर रहे हैं और राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहे हैं। आज आवश्यकता है– सच्चरित्र राजनेताओं, ऐसे लोगों की जो राजनीति को व्यवसाय नहीं, देश सेवा समझे जैसे लाल बहादुर शास्त्री। हमें बच्चों में राजनैतिक चेतना का विकास विद्यालय स्तर से शुरू करना होगा। उनमें संविधान के प्रति आस्था विकसित करनी होगी, उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करना होगा, ताकि वे भविष्य में सही राजनैतिक लोगों का चयन कर सकें।

विश्वशांति की भावना का विकास – वर्तमान में विश्वशांति की भावना के विकास में अहिंसक दृष्टिकोंण के विकास की सर्वाधिक आवश्यकता है। अहिंसक भावना के विकास हेतु शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों में 'अहिंसा प्रशिक्षण' कार्यक्रम अनिवार्य रूप से प्रारम्भ किया जाना चाहिये। ताकि विद्यार्थियों के दृष्टिकोंण में परिवर्तन किया जा सके। वैश्विक स्तर पर बढ़ रहे आतंकवाद को नियंत्रित करने में वह प्रभावी उपाय हो सकता है। महात्मा गांधी ने अपने अहिंसा के अस्त्र से यह साबित किया था कि बड़ी से बड़ी शक्ति को अहिंसा के माध्यम से झुकाया जा सकता है।

साम्प्रदायिक सौहार्द का विकास – वर्तमान में साम्प्रदायिक वैमनस्य निरन्तर बढ़ता जा रहा हैं, जिसका प्रमुख कारण धार्मिक कट्टरता की भावना होने के साथ–साथ कुछ अवसरवादी ताकते हैं, जो हिन्दु–मुस्लिम लोगों की भावनाएं भड़काकर अपना स्वार्थ साधते रहते हैं। लेकिन इसका दुष्परिणाम पूरे समाज तथा राष्ट्र को भुगतना पड़ रहा है। अतः आज आवश्यकता है धार्मिक सौहार्द्र की भावना के विकास की, ताकि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही सभी धर्मों का सम्मान करें। इसके लिए पारिवारिक स्तर पर अभिभावकों को बच्चों के साथ विभिन्न धर्मों के कार्यक्रमों में आना जाना चाहिये तथा शिक्षण संस्थानों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित होने चाहिये जिसमें सभी धर्मों के विद्यार्थी मिल–जुल कर भाई–चारे की भावना के साथ शिरकत करें।

नारी के प्रति सम्मान – वर्तमान में देख रहे हैं कि महिला उत्पीड़न के मामलों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। ऑफिस में, बस में, ट्रेन में, सड़क पर, अस्पतालों में योन शोषण की घटनाएं बढ़ती जा रही है, जो कलुषित मानसिकता का परिणाम है। यह एक गंभीर चिन्तनीय विषय है। इसका केवल एक मात्र उपाय है– व्यक्ति के दृष्टिकोण, उसकी सोच में परिवर्तन। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक कितने ही कानून हम बना लें, उनका कोई कारगर परिणाम नहीं आ सकता। व्यक्ति की मानसिकता, उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन हेतु आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान, '*अहिंसा प्रशिक्षण* अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। अहिंसा प्रशिक्षण न केवल विद्यार्थियों को, बल्कि उनके

Scanned by CamScanner

अभिभावकों को भी प्रदान किया जाना चाहिये। साथ ही बच्चों को प्रारम्भ से ही घर में बड़ों द्वारा अपने आचरण से महिलाओं के सम्मान की सीख प्रदान करनी चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता की भावना – अभी हाल ही में एक शब्द बहुत ज्यादा प्रचलित हुआ– 'असहिष्णुता'। जिस पर जोर–शोर से बहस हुई। जिन लोगों को इस शब्द का अर्थ भी नहीं आता था, वे भी विशेषज्ञों की भांति बोलते थे। किसी भी समाज या राष्ट्र के स्वस्थ विकास के लिए वहां के लोगों का धार्मिक रूप से सहिष्णु होना आवश्यक है। किसी को भी एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं को आहत नहीं करना चाहिये। जब–जब किसी भी वजह से धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं, समाज को विनाशकारी परिणाम फेलने पड़े हैं। अतः अभिभावकों तथा शिक्षकों को बच्चों में अपने आचरण द्वारा सर्वधर्म समभाव की भावना के विकास का प्रयास करना चाहिये।

प्रायोजित आतंकवाद पर नियंत्रण– मेरा यह मानना है देश को जितना खतरा बाहरी आंतकवाद से है, उतना ही आंतरिक आतंकवाद से भी है। कुछ राष्ट्र विरोधी तत्व संविधान की कमियों का फायदा उठाकर देश में आंतरिक आंतकवाद को हवा दे रहे हैं और हमारे नादान युवा ऐसे लोगों के बहकावे में आकर न केवल स्वयं का भविष्य तबाह कर रहे हैं, बल्कि राष्ट्र का नुकसान भी कर रहे हैं। इससे शर्म की बात क्या होगी, किसी राष्ट्र के नागरिक राष्ट्र विरोधी नारे लगाएं, उस राष्ट्र के टुकड़े करने की सोचे? इस सोच से हमें अपने युवाओं को बाहर निकालना है। मूल्य शिक्षा इस दिशा में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है। राष्ट्र प्रेम के मूल्य का विकास घर–परिवार तथा विद्यालयों में बच्चों में प्रारम्भ से ही किया जाना चाहिये और ये भावना इतनी सशक्त हो कि राष्ट्र विरोधी ताकतें कभी अपने मंसूवो में कामयाब न हो।

इस प्रकार संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान हालात में मूल्य परक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। वर्तमान में समाज की विकराल समस्याओं, जैसे– आतंकवाद, भ्रष्टाचार, पर्यावरण संकट, कालाबाजारी, माता–पिता, गुरुओं का गिरता सम्मान, टूटते परिवार, बिखरते रिश्ते, बलात्कार की बढ़ती घटनाएं, असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता जैसी समस्याओं के समाधान और शांति की स्थापना में मूल्य शिक्षा की महत्ती भूमिका हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. पाठक, पी.डी. (2008), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. पाण्डेय, रामशकल (2006), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. नेगी, सुरेन्द्र सिंह (2000), नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिसर्स, बीना (म.प्र.)।
4. वर्मा, सुरेन्द्र (1996), भारतीय जीवन मूल्य, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
5. समणी मल्लिप्रज्ञा; जोशी, हेमलता (2009), शिक्षा दर्शन एवं मूल्य विकास, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.)

Scanned by CamScanner